Today's Poem – 12.06.2014

क्रोध हमारा दुश्मन करता कंगाल

इस भूत को निकाल हो जाओ मालामाल

अंतर्मुखी बन भूतों को निकालो

हर कार्य शान्ति से करो और शांति फैलाओ

किसी भी देहधारी से दिल नहीं लगाना है

देह सहित सब कुछ भूल याद की यात्रा से स्वयं में रूहानी बल भरना है

"हिम्मते बच्चे मददे बाप" का वरदान

बनाता निर्बल से बलवान और हिम्मतवान

दृढ़ संकल्प करना ही व्रत लेना है

इसे कभी नहीं तोड़ना है

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!